Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

Lord Maha Mrityunjaya Mantra Siddhi

भगवान् महामृत्युंजय मंत्र सिद्धि

Gurudev Raj verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413 (WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

भगवान् 'मृत्युंजयशिव' ब्रह्माविष्णुइन्द्र सहित समस्त अग्रणीय देवीदेवताओं द्वारा उपासित हैं। इसलिये इन्हें देवाधिदेव 'महादेव' भी कहा जाता है। भगवान् शिव संसाररूपी रोग को दूर करने के लिये महावैद्य हैं। सबके ज्ञाता तथा समस्त औषधों के औषध हैं। तंत्रविद्या में सिद्धि अर्जित करने के लिये शिवजी या उनके स्वरूप भैरवजी की प्रसन्नता अति अनिवार्य है। अर्थात् इन्हें प्रसन्न किये बिना किसी प्रकार के मंत्रतंत्रयंत्र में सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती। सात करोड़ उपास्य मंत्र भगवान् शिव के पांचमुखों (सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष, ईशान ये शिव के पांच मुख हैं।) द्वारा उत्पादित कहे गये हैं। इसलिये इन्हें 'जगतगुरु' की उपाधि भी प्राप्त है। रुद्रयामलतंत्र में इनके विषय में लिखा है– 'मृत्युंजय का जापक करोड़ों वर्ष (अर्थात् पूर्णायु) जीने के बाद परम ब्रह्म में लीन हो जाता है। मृत्युंजय का जापक सर्वव्यापक रूप से सर्वदा बना रहता है।'

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

शास्त्रों, तंत्रों तथा पुराणों में भगवान् शिव के अनेंको विचित्र एवं विराट् अवतारों का वर्णन किया गया है। इनमें अष्टभैरव, क्रोधभैरव, स्वर्णाकर्षणभैरव, सदाशिव, हनुमान्, मृत्युंजय, पक्षिराज एवं महाकाल आदि प्रमुखस्वरूप हैं। भगवान् मृत्युंजय की विधिवत् उपासना करने से मृत्यु के समान भयानक कष्ट, दुःख, व्याधि, क्लेश, परप्रयोग, महामारी, ग्रहपीड़ा, शत्रु, दरिद्रता एवं असाध्य रोगों का शमन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सुखसमृद्धि, सन्तानप्राप्ति, ज्ञानप्राप्ति, पदवृद्धि, सौभाग्यागमन एवं मोक्षलाभ हेतु भी इनकी साधना उत्तम एवं सुप्रसिद्ध है। इसी मृतसंजीवनी विद्या के प्रभाव से ही दैत्यगुरु शुक्राचार्य मृत दानवों को पुनः जीवीत कर देते थे। समस्त वेदों, ग्रन्थों, तंत्रों एवं पुराणों का सार केवल शिव ही हैं।

महामृत्युंजय मंत्र के एक लाख जप से शरीर की शुद्धि होती है। दो लाख जप से पूर्वजन्म की बातों का स्मरण होता है। तीन लाख जप से काम्य वस्तुएं प्राप्त होती हैं। चार लाख जप करने से स्वप्न में महादेव के सुन्दर दर्शन होते हैं और पांच लाख जप से सुयोग्य साधक को महादेव के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। दस लाख जप करने से सम्पूर्ण कामनाओं का सिद्धि होती है। पूर्वकाल में राजा क्षुव ने वज्र के प्रहार से महर्षि दधीचि को काट डाला था। दधीचि ने गिरते समय शुक्राचार्य का स्मरण किया। योगी शुक्राचार्य ने महामृत्युंजय मंत्र के प्रभाव से दधीचि के कटे अंगों को पूर्ववत्

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

जोड़ दिया था। बाद में शुक्राचार्य के उपदेश से दधीची ने इसी मंत्र के प्रभाव से महादेव से अवध्यता, वज्रमय अस्थि और अदीनता पाकर राजा क्षुव को परास्त किया था।

शुभकाल में पूजन के प्रथम दिन (अपने गुरु से समस्त नियमों की जानकारी प्राप्त कर) दृढ़ता एवं उत्साहपूर्वक भगवान् मृत्युंजय शिव की प्रतिमा, चित्र या यंत्र की स्थापना कर महापूजन करें, जिसमें धूप दीपक के साथ नाना प्रकार के उत्तम पुष्प, फल, तुलसीपत्र, नैवेद्य, खीर एवं बेलपत्रादि अर्पित करते हुए भगवान् शिव से साधना में निर्विघ्नता एवं सफलता का आशीर्वाद मांगे। इसके पश्चात् नित्य अपनी सामर्थ्यानुसार पूजन कर मंत्रजप आरम्भ करें। मृत्युंजय साधक पूर्ण सिद्धि के लिये विधिवत मंत्र, कवच एवं मालामंत्र को एक-एक करके विशेष संख्या में जप कर उनका सिद्धिकरण कर लेना चाहिये। सिद्धिकरण के लिये महामृत्युंजय मंत्र के संकल्पपूर्वक सवा लाख जप, कवच के 2100 पाठ तथा सहस्राक्षर माला मंत्र के 1100 पाठ कम से कम अवश्य करें। इस सिद्धिकरण में समय तो अवश्य लगता है, परन्तु परिणाम एवं अनुभव अति सुखद प्राप्त होते हैं। धनलाभ के लिये अभिमंत्रित स्फटिक माला, पुत्रप्राप्ति के लिये पुत्रजीवक माला, मंगलग्रह की शान्ति एवं धनैश्वर्य के लिये मूंगे की माला तथा सर्वकार्यसिद्धि के लिये रुद्राक्ष माला उत्तम है। इस सिद्धिकरण में समय अवधि अपने अनुकूल ही तय करें। जैसे- 21, 31 या

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

41 दिन। मंत्र का दशांश होम कामनानुसार सम्पन्न करें अथवा गुरु या ब्राह्मण से करवायें।

प्रातःकाल शय्या त्यागने के समय शिवशक्ति से प्रार्थना- साधक ब्रह्ममुहूर्त में शयन से उठकर माता पार्वती सहित महादेव का स्मरण करे तथा हाथ जोड़ मस्तक झुकाकर भक्तिपूर्वक उनसे इस प्रकार प्रार्थना करे- जगतपिता परमेश्वर! उठिये, उठिये! मेरे हृदय मन्दिर में शयन करने वाले प्रभु! उठिये। उठिये ब्रह्माण्ड में सब मंगल कीजिये। मैं धर्म को जानता हूं, किंतु उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं होती। मैं अधर्म को भी जानता हूं, किंतु मैं उसका त्याग नहीं कर पाता। देवाधिदेव! आप मेरे हृदय में सुस्थित होकर मुझे जैसी प्रेरणा देते हैं, मैं वैसा ही करता हूं। आपके हाथों में मेरे जीवन की डोर है, कृपापूर्वक मुझे सत्कर्म करने की प्रेरणा व शक्ति प्रदान करें। इसके पश्चात् गुरु जिस दिशा में निवास करते हो, उस दिशा में उनको नमस्कार करते हुए स्नानादि के लिये पलायन करे।

शिवार्चन- जो लक्ष्मी प्राप्ति की इच्छा करता हो, वह कमल, बिल्वपत्र, शतपत्र और शंखपुष्प अथवा सुगन्धित एवं सुंदर पुष्पों से

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

शिवार्चन करे। विधिवत् 1 लाख, 51 हजार या 11 हजार संख्या में शिवार्चन करने से सर्व पापों का नाश होता है और महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

एक लाख दर्भों द्वारा पूजन करने से मोक्षलाभ, एक लाख दुर्वार्पण करने से आरोग्यता, धतूरे के एक लाख पुष्पार्पण करने से पुत्रलाभ (लाल डंठलवाला धतूराशुभदायक है), अगस्त्य के एक लाख पुष्पार्पण करने से पुरुष को महान यश की प्राप्ति होती है।

तुलसीदल द्वारा पूजा करने से भोग मोक्ष दोनों का लाभ होता है। लाल और सफेद आक, अपामार्ग और श्वेत कमल के एक लाख पुष्पों द्वारा पूजा करने से भी भोग मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जपा (अड़हुल) के एक लाख पुष्पों द्वारा की गया पूजा शत्रुओं का विनाश करती है।

करवीर के एक लाख पुष्प रोगों का उच्चाटन करने वाले होते हैं। बन्धूक (दुपहरिया) के पुष्पों द्वारा पूजन आभूषण आदि प्रदान करता है।

चमेली के पुष्पों से वाहन आदि का लाभ होता है। अलसी के पुष्पों से पूजन करने वाला पुरुष भगवान् विष्णु का प्रिय होता है।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

बेला के पुष्पों से शुभलक्षणा स्त्री प्राप्त होती है। जूही के पुष्पों से अन्न लाभ, कनेर पुष्पों से वस्त्र, सेदुआरि या शेफालिका के पुष्पों से मन पवित्र होता है।

हरसिंगार के पुष्पों से सुख-सम्पत्ति की वृद्धि होती है। राई के पुष्प शत्रु को मृत्यु प्रदान करते हैं। चम्पा और केवड़े को छोड़कर शेष सभी सुन्दर पुष्प शिव को अर्पित किये जा सकते हैं।

अखण्डित चावल अर्पण करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। रुद्रप्रधान मंत्र (ओं नमो भगवते रुद्राय) अथवा रुद्र गायत्री (ओं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्) से पूजा करके भगवान् शिव को सुन्दर वस्त्रादि अर्पित करें और उसी पर चावल रखकर समर्पित करना उत्तम है।

तिलों द्वारा एक लाख आहुति प्रदान करने अथवा अर्पण करने से महापातकों का नाश होता है। जौ द्वारा पूजा करने से स्वर्गीय सुख प्राप्त होता है।

गेहूं से निर्मित पकवान के शिवजी की पूजा करने से संतान वृद्धि होती है। मूंग से पूजा करने से भगवान् शिव सुख प्रदान करते हैं।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

शिवलिंगस्नान– वशीकरण कर्म में घी व शहद से स्नान कराना चाहिये। शांति कर्म व मृत्युंजय जपादि कर्म में दूधादि से, आकर्षण कर्म में शहद से एवं क्रूर कर्म (अकृत्य कर्म) में भस्म राख से स्नान कराना चाहिये।

साधनाकाल स्वप्न एवं प्रत्यक्ष अनुभव– अनुष्ठान काल में देवता स्वप्न में या प्रत्यक्ष रूप से साधक को कार्य सिद्धि–असिद्धि एवं अपनी सत्ता के कुछ ना कुछ अनुभव अवश्य कराते हैं। जिन्हें अनुष्ठान के अन्तर्गत कोई शुभ स्वप्न न दिखाई दे या साधना के समय कोई दैवीय अनुभूति न हो तो उन्हें समझना चाहिये कि उनके प्रारब्ध में प्रबल कष्ट है या उनकी साधना में कोई न कोई दोष है। इसके निवारण के लिये अनुभवी गुरु का मार्गदर्शन सबसे अच्छा विकल्प है। कुछ दिव्य स्वप्न तथा अनुभव मेरे एवं मेरे शिष्यों द्वारा अनुभवित किये गये हैं। जिन्हें साधकजनों के समक्ष प्रस्तुत कर रहां हूं। विस्तार भय से केवल कुछ अनभुवों को प्रकट कर रहा हूं –

- सबसे उत्तम अनुभव, अनुष्ठान काल के समय स्वप्न में देवता के अनेंको बार प्रसन्नचित्त मुद्रा में दर्शन होना है। यह देवता की प्रसन्नता एवं कार्य सिद्धि का अमिट लक्षण है। विराट्रूप एवं तेज आभायुक्त देवता के स्वप्न में दर्शन होना कार्यसिद्धि का सिद्ध

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

लक्षण है। एक या दो बार लघुस्वरूप दर्शन होने से कार्य सिद्ध न होने का भी अनुभव है। देवता के साथ यदि अपने गुरुदेव के दर्शन भी हो तो समझना चाहिये कि आपके गुरु एक विशिष्ट साधक हैं और आपके गुरु पर देवता की विशेष कृपा है। स्वप्न में देवता का स्वरूप विराट् और प्रकाशमय हो तो अत्यन्त शुभ होता है।

- पूजन करते समय देवता के समक्ष रखी पूजन सामग्री जैसेः- फल, फूल, नैवेद्य या अन्य सामग्री कई बार खिसक कर नीचे गिर जाये तो यह देवता की प्रसन्नता के संकेत हैं। परन्तु मनोवांछित कार्य भी पूर्ण रूप से सिद्ध हो यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि देवता प्रसन्न होते हुए भी साधक को उसकी साधना का फल प्रकृति ने नियमानुसार ही प्रदान करते हैं। इस अनुभूति में कार्य पूर्ण हो, विलम्ब से पूर्ण हो या कदादि पूर्ण ना हो, यह सब दैवीय इच्छा पर निर्भर करता है। सम्भवतः इस सूक्ष्म माया से देवता अपने भक्त के प्रति स्नेह एवं सहानुभूति प्रकट करते हैं। संकटकाल में धैर्य, बल एवं साहस प्रदान करते हैं तथा भक्त को साधना मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं। कई लोग इस प्रकरण को कार्य सिद्धि का लक्षण कहते हैं, परन्तु मेरा स्वयं अनुभव ऐसा नही है।
- मेरे एक शिष्य ने मेरे संरक्षण में अपनी बीमारी एवं पारिवारिक क्लेश से मुक्ति हेतु हनुमानजी का अनुष्ठान किया था। मंत्र जप

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

के पश्चात् वह आलस्य एवं थकान के कारण अपनी शय्या पर लेट गया और श्रीकृष्ण का एक भजन सुनते-सुनते ही वह निद्रावस्था में पहुंच गया। तत्पश्चात् उसने एक दिव्य स्वप्न देखा कि- मथुरा के एक मन्दिर में साक्षात् श्रीकृष्ण उसके समक्ष उपस्थित हैं। नील आभायुक्त श्रीकृष्ण का कद उससे कुछ लम्बा था इसलिये उसका सिर श्रीकृष्ण की छाती पर ही आया था। स्वप्न में श्रीकृष्ण को देखते ही वह उनकी छाती से लिपटकर फूट-फूट कर रोते हुए कहने लगा कि भगवान् मेरे दुःखों का अन्त कैसे होगा? परन्तु भगवान् ने कोई उत्तर नहीं दिया और वे तत्काल अदृश्य हो गये। लेकिन भगवान् श्रीकृष्ण को भी उसने अपने प्रति चिन्तित एवं दुःखी अवश्य देखा था। अनुष्ठान पूर्ण होने के बाद भी उसे कोई राहत नहीं मिली, क्योंकि मनुष्य के प्रारब्ध में कुछ पापकर्म ऐसे होते हैं, जिनका निवारण केवल भोगकर ही होता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में देवता भी मनुष्य का पूर्णरूप से साथ नहीं देते। क्योंकि स्वयं देवता भी काल एवं प्रकृति के कड़े नियमों के आधीन हैं। सम्भवतः इस प्रकार दर्शन देने जैसी लीलाओं से वह अपने भक्त की अपने प्रति विश्वास की डोर टूटने नहीं देते एवं साधना कर्म करने के लिये उत्साहित एवं प्रेरित करते हैं।

- कई भाग्यशाली साधकों को स्वप्न में ही देवता से भविष्यत्व मंत्र प्राप्त हो जाता हैं। यह भी देवता की कृपा दृष्टि के संकेत हैं। इसके कई महत्वपूर्ण कारण हो सकते हैं। जैसे- साधक के पूर्व

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

जन्म में साधना संस्कार प्रबल होना, वर्तमान काल में कठोर जप करना या विशिष्ट गुरु द्वारा मंत्र ग्रहण करना इत्यादि। स्वप्न में मंत्र, स्वयं देवता या गुरु मुख से प्राप्त हो सकता है। इसके अतिरिक्त मंत्र स्पष्ट रूप से केवल सुनाई या दिखाई भी दे सकता है। स्वप्न प्राप्त मंत्र तुरन्त कार्य करते हैं, सिद्ध किये बिना सिद्धि प्रदान करते हैं। स्वप्न प्राप्त मंत्र तंत्रशास्त्रपुराणों में उपस्थित हो भी सकते हैं और नहीं भी।

- मंत्र स्वतः ही जिह्वा पर चलायमान होने लगे या मन ही मन सर्वकाल स्वतः ही मंत्र का चिन्तन होने लगे या जपकाल के समय अपना शरीर वायु के समान हल्का व सूक्ष्म हो जाये जैसे- साधक का शरीर पृथ्वी से ऊपर उठने लगे अथवा अपने शरीर के भार का आभास ही न हो। ये अवस्थायें देवता की कृपा प्राप्ति एवं मंत्रसिद्धि के अच्छे संकेत हैं। इसके अतिरिक्त मन में शान्ति, प्रसन्नता एवं आनन्द का अनुभव होना भी शुभकारी होता है।
- स्वप्न में स्वच्छ मिठाई, फल, फूल, दही या मलाई देखना अथवा खाना शुभकारी होता है।
- स्वप्न में समुद्र या विशाल नदी के स्वच्छ जल में स्नान करना शुभकारी है।
- स्वप्न में अपने पितरों के शान्त स्वरूप में दर्शन होना भी शुभ फल प्रदान करता है।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

- स्वप्न में देवता की किसी भी प्रकार से पूजार्चना करना, अपना मंत्रजप करना या सौम्य रूप में देवता के दर्शन होना शुभ फल प्रदान करता है। क्रोधवस्था में दर्शन होना साधक से कोई भारी भूल होना दर्शाता है।
- स्वप्न में जटानारियल का पानी पीना अति उत्तम है।
- स्वप्न में देवता की छवि धुंधली, परन्तु उनके अस्त्र स्पष्ट दिखाई दे, तो अशुभ है।
- स्वप्न में किसी सुन्दर श्वेत वस्त्र एवं तेजयुक्त स्त्री, अप्सरा या परी जैसी छवि के दर्शन होना शुभ फल प्रदान करता है।
- हनुमानजी की साधना में यदि स्वप्न दिखे कि कोई वानर साधक का सिर अपनी गोद में रखकर उसके सिर को प्यार से सहला रहा है। यह हनुमान जी की विशेष कृपा सिद्धि का संकेत है। अगर वानर डराये तो कोई भूल होना दर्शाता है। अगर वानर किसी मित्र या सम्बन्धी को स्वप्न में काटता दिखें, तो उस पर विपत्ति का संकेत है।
- हनुमानजी का मंत्रजप करते समय यदि उनकी रक्त प्रतिमा में से कोई दिव्य तेज या प्रकाश निकलता हुआ दिखाई दे। जिससे साधना स्थल प्रकाशमय हो जाये तो अति उत्तम है, निःसन्देह लाभ होगा। यह विचित्र माया केवल कुछ ही क्षण ही होती है।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

- बगलामुखी उपासना के अन्तर्गत स्वप्न में पीतपुष्प, पीतमिष्ठान, पीतशर्बत, पीतवस्त्र देखना अथवा इन्हें ग्रहण करना शुभकारी होता है। विस्तार भय से साधनानुभव पर यही विराम लगाते आगे बढ़ते हैं।

विशेष कर्म– विशेष एवं शीघ्र लाभ के लिये कामनानुसार शिवलिंग का नित्य सूक्ष्म स्नान या महाभिषेक किया जाता है। इसके पश्चात् अपनी कामानुसार अनामिका अंगुली से शिवलिंग पर ॐ, ऐं, ह्रीं, श्रीं या क्लीं लिखकर कार्य सिद्धि हेतु विनती करें।

- प्रतिदिन 54 या 108 बेलपत्रों पर घृत, शहद, खीर या चन्दन का लेपकर भगवान् शिव को अर्पित करने से भगवान् शिव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार 31 या 41 दिन अर्चन करने से महालक्ष्मी एवं महासौभाग्य का आगमन होता है। यह पूजन अपने गृह मन्दिर या प्राचीन शिव मन्दिर में कर सकते हैं। आर्थिक सम्पन्नता के लिये इस सामग्री से होम भी किया जा सकता है। शिवमहापुराण के अनुसार चतुर्थी, अमावस्या, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, संक्रान्ति और सोमवार के दिन बिल्वपत्र तोड़ना वर्जित है। ऐसी परिस्थिति में निषिध तिथि से एक दिन पूर्व ही बेलपत्र एकत्रित कर लें अथवा एक दिन पूर्व अर्पित किये बेलपत्रों को जल से स्वच्छ कर पुनः अर्पित कर दे। बेलपत्र एवं तुलसीपत्र को पुनः

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

स्वच्छ करके अर्पित किया जा सकता है। इनमें निर्माल्य दोष नहीं होता।

- रात्रिकाल में निर्जन श्मशान में तेल के 54 या 108 दीपक 31 दिन तक भगवान् भैरव या शिव को अर्पित करने से शत्रुपीड़ा एवं संकटकाल से शीघ्र मुक्ति मिलती है। साथ में नैवेद्य आदि अवश्य प्रस्तुत करें।
- प्रत्येक सोमवार को भगवान् शिव के मन्दिर में खीर व उत्तम सामग्रियां अर्पण करने से शीघ्र धनागमन होता है।
- कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि की संज्ञा दी गयी है। अतः प्रत्येक कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को भगवान् शिव का उपवास रख रात्रिकाल में महापूजन एवं महाजप करें।
- शिव साधक कामनानुसार अभिमंत्रित रुद्राक्ष को कण्ठ में अवश्य धारण करें एवं कम से कम एक बार शिवमन्दिर में शिवलिंग पर तांबें का शेषनाग छत्ररूप में अवश्य अर्पित करे। इस समर्पण से भगवान् शिव की प्रसन्नता के अतिरिक्त पितृदोष, कालसर्पयोग एवं राहुकेतु ग्रहों की मारक दशा से शान्ति मिलती है। अगर सामर्थ्य हो तो एक से अधिक मन्दिर में भी शेषनाग अर्पित कर सकते हैं। नागपंचमी के दिन व्रत रख सांप को सपेरे से मुक्त कराने से भी इन समस्याओं से राहत मिलती है।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

- अगर मनुष्य सामर्थ्यशील हो तो समुचित स्थान पर विधिवत् बेलवृक्ष की स्थापना करवायें। बेलवृक्षारोपण करने वाले मनुष्य को प्राप्त होने वाला फल अनन्त कहा गया है। बिल्ववृक्ष के पत्र या पुष्पों से कोई भी व्यक्ति शिवशक्ति की पूजा करेगा, उसमें से पुण्य का एक भाग वृक्ष लगाने वाले धर्मात्मा का भी मिलेगा इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं समाजिक दृष्टि से वृक्षारोपण करना एक उच्चस्तरीय कार्य है। जो प्रतिदिन एक वर्ष तक बिल्ववृक्ष को धूप दीपक, नैवेद्य एवं जलादि अर्पित करता है वह एक वर्ष के भीतर ही लक्ष्मीवान् एवं शिवमय हो जाता है। इसके अतिरिक्त वृक्ष पर रहने वाली शक्तियां भी अदृश्य रूप में मनुष्य की सहायता करती है। कुछ लोग बिल्ववृक्ष की स्थापना निवास स्थल में शुभ नहीं मानते। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं है, क्योंकि सौभाग्य से पिछले पांच वर्षों से मेरे निवासस्थल में बिल्ववृक्ष स्थापित है। जब बेलपत्र अर्पित करने से ही शिव को प्रसन्न किया जा सकता है, तो बेलवृक्ष स्थापित करने में क्या समस्या हो सकती है। बिल्वृक्ष के मूल भाग में की की गई साधना (विशेषतः शिवशक्ति, भैरव, लक्ष्मी, बगलामुखी एवं कुबेर आदि) अनन्त फल प्रदान करती हैं।

  योगिनीतंत्र में भगवान् शिव ने कहा है- 'जो मनुष्य मुझे बिल्ववृक्ष के पत्र, फूल, फल या बिल्व समिधा का चन्दन अर्पित करता है। वह शीघ्र ही मेरी कृपा प्राप्त करता है। जो बिल्व समिधा का

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

चन्दन अपने मस्तक पर धारण करता है, वह महती लक्ष्मी का अधिकारी होता है। बिल्ववृक्ष के दर्शन, स्पर्श एवं परिक्रमा करने वाला मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। बिल्ववृक्ष साक्षात् मेरा ही स्वरूप है।'

श्रीमहामृत्युंजयमंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमृतसंजीवनी महामृत्युंजयमंत्रस्य, वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः, पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दासि, सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीमृत्युंजयप्रीतर्ये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीवामदेवकहोलवसिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्येः। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

अंगन्यास- ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय – तर्जनीभ्या नमः – शिरसे स्वाहा।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा – मध्यमाभ्यां नमः – शिखायै वषट्।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनान् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रौं – अनामिकाभ्यां नमः – कवचाय हुम्।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय – कनिष्ठिकाभ्यां नमः – नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोराय – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः – अस्त्राय फट्।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

मंत्रवर्णन्यास- ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः पश्चिमुखे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिणमुखे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तरमुखे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मं नमः कण्ठे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिंगे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्धं नमः दक्षिणोरुमूले।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः नं नमः वामोरुमूले।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरुमध्ये।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्वां नमः वामोरुमध्ये।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिणजानुनि।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामाजानुवृत्ते।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ध्यं नमः वामस्तने।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः नां नमः दक्षिणपार्श्वे।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामपार्श्वे।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः र्मुं नमः वामपादे।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षकरे।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः वामकरे।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षनासायाम्।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम्।
ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः तां नमः शिरसि।

ध्यानम्- हस्ताम्भोजयुगस्थ कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ। अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्रवत्, पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम्।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

भावार्थ– 'अपने अंगस्थ दो करों में अमृत कुम्भ धारण किये हुए, उसके ऊपर वाले दो हाथों से उस अमृत कुम्भ से सुधामय जल निकालते हुए, उसके ऊपर के दोनों हाथों से उस अमृत जल को शिर पर अभिषिक्त करते हुए, शेष दो हाथों में क्रमशः मृग और अक्षमाला धारण किये हुए, शिरःस्थित चन्द्रमण्डल से स्रवित अमृतधारा से अपने शरीर को आप्लावित करते हुए, पार्वती सहित त्रिनेत्र सदाशिव मृत्युंजय का मैं ध्यान करता हूं।' ध्यान पश्चात् सुगन्धित पुष्प, बेलपत्र, चन्दन, धूप दीपादि से महादेव को संतुष्ट करना चाहिये। स्थूल सामग्री के अभाव में भावानात्मक एवं मानसिक पूजन इस प्रकार करे –

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

महामृत्युंजयमन्त्र- 'ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।'

शैव विधि से एक लाख जप कर अंत में हवन, तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोज करवाना चाहिये। इन सब क्रियाओं को करने में सक्षम न हो तो जप की संख्या अधिक कर देनी चाहिये। बेल, पलाश, खैर, तिल, सरसों, दूध, दही, घी तथा दूब इन सबकों होम के लिये उत्तम कहा गया है। जो व्यक्ति अपने जन्मनक्षत्र से 10वे या 21वे नक्षत्र में गिलोय की चार अंगुल लम्बी समिधाओं से होम करता है वह रोग और अपने शत्रुओं को नष्ट कर सम्पत्तिवान होता है। बेल की समिधाओं एवं फल से होम का भी यह फल कहा गया है। ब्रह्मतेज हेतु पलाश की समिधाओं से होम करना चाहिये। पापकर्मों से मुक्ति हेतु तिल से, राजा के समान शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु पीली सरसों से, शत्रुओं का नाश करने के लिये सरसों एवं लोंग से धनैश्वर्य हेतु खीरयुक्त तिलादि से, परकृत्य एवं अपमृत्यु निवारण के लिये दही तथा विवाह हेतु लाजा होम करना चाहिये। होम संख्या 10 हजार कही गयी है। जो स्नान कर सूर्याभिमुख होकर नित्य एक माह तक एक हजार मंत्र का जप करता है, वह शारीरिक तथा मानसिक रोगों से विमुक्त होकर दीर्घायु प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

कुछ गुप्तविधि एवं कर्म ऐसे भी होते हैं, जो अति शीघ्र एवं उत्तम फल प्रदान करते हैं, उन सबको सुयोग्य गुरु की सेवा से प्राप्त किया जाता है।

शिवगायत्री- 'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।'

त्र्यम्बक मन्त्र- विनियोगः- ॐ अस्य त्र्यम्बक मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, त्र्यम्बकपार्वतीपतिर्देवता, त्र्यं बीजं, बं शक्तिः, कं कीलकं, सर्वेष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ वसिष्ठर्षये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। त्र्यम्बक पार्वतीपतिर्देवतायै नमः हृदि। त्र्यं बीजाय नमः गुह्ये। बं शक्तये नमः पादयोः। कं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

अंगन्यास में प्रत्येक अंग को स्पर्श करते हुए देवता को शरीर में भावित करे-

ॐ त्र्यम्बकं - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः।

यजामहे - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

सुगंधिम्पुष्टिवर्धनम् – मध्यमाभ्यां नमः – शिखायै वषट्।
उर्वारुकमिव बंधान् – अनामिकाभ्यां नमः – कवचाय हुं।
मृत्योर्मुक्षीय – कनिष्ठिकाभ्यां नमः – नेत्रत्रयाय वौषट्।
मामृतात् – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः – अस्त्राय फट्।

ध्यानमंत्र– हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरोद्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहंतं परम्। अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं स्वच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

त्र्यम्बकमन्त्र– 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।'

पौराणिक मृत्युंजय मंत्र– 'ॐ मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजराव्याधिपीड़ितं कर्मबन्धनैः।'

विवाह हेतु मृत्युंजय मंत्र– 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम् पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।' विवाह हेतु लाजा होम मधुत्रय से करें।

दशाक्षर मृत्युंजय मन्त्र– 'ॐ अमृत मृत्युंजयाय नमः।'

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

भिन्नपाद मृत्युंजयमंत्र- 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॐ सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ॐ उर्वारुकमिव बन्धान् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।'

अपनी कामनानुसार बीजमंत्र को मंत्र के प्रत्येक पाद के पश्चात् सम्मिलित कर जप करने की प्रक्रिया को भिन्नपाद विधि कहा जाता है। सर्वसिद्धि, मोक्ष एवं ब्रह्मज्ञान प्राप्ति हेतु 'ॐ' विद्या एवं ज्ञान लाभ हेतु 'ऐं' आर्थिक लाभ के लिये 'श्रीं' तथा वशीकरण या विवाह कार्य के लिये 'क्लीं' का प्रयोग किया जाता है। इससे मंत्र शीघ्र फलीभूत होता है।

त्र्यक्षरमृत्युंजय मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीत्र्यक्षरात्मक मृत्युंजय मंत्रस्य कहोल ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीमृत्युंजय देवता, जूं बीजम्, सः शक्तिः, ॐ कीलकम् सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ कहोलर्षये नमः शिरसि। देवी गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे। मृत्युंजयदेवतायै नमः हृदि। जूं बीजाय नमः गुह्ये। सः शक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः)।

ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा।

ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्।

ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुम्।

ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ॐ चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं मुद्रापाशामृगाक्ष सूत्रविलासत्पाणिं हिमांशुप्रभम्। कोटीरेन्दु गलंत्सुधास्नुततनुं हारादिभूषोज्जवलं कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत्।।

त्र्यक्षरीमंत्र- 'ॐ जूं सः।' अथवा 'हौं जूं सः।'

एकाक्षर मंत्र- 'हौं। ('ह्रौं')

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

सहस्राक्षरमृत्युंजयमालामंत्र– 'ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सर्वमंत्रस्वरूपाय सर्वयंत्राधिष्ठिताय सर्वतंत्रस्वरूपाय सर्वतत्त्वविदूराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वतीप्रियाय सोमसूर्याग्निलोचनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामणिमुकुटधारणाय माणिकभूषणाय सृष्टिस्थिति प्रलयकालरौद्रावताराय दक्षाध्वरसंकाय महाकालभेदकाय मूलाधारैकनिलयाय तत्त्वातीताय गंगाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्गसाधनायानेक कोटिब्रह्माण्डनायकाय अनन्त वासुकि तक्षक कर्कोटक शंख कुलिक पद्ममहापद्मेत्यष्टनागकुलभूषणाय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशायाकाशादि स्वरूपाय ग्रहनक्षत्रमालिने सकलाय कलंकरहिताय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकसंहर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सर्वलोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवेदान्तपारगाय सकललोकैकवरप्रदाय सकललोकैकशंकराय शशांखशेखराय शाश्वतनिजावासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय निर्लोभाय निर्मोहाय निर्मदाय निश्चिन्ताय निरहंकाराय निराकुलाय निष्कलंकाय निर्गुणाय निष्कामाय निरूपप्लवाय निरवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातंकाय निष्प्रपंचाय निस्संगाय निर्द्वन्दाय निराधाराय निरोगाय निष्क्रोधाय निर्गमाय निष्पापाय निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निस्संशयाय निरंजनाय निरूपमविभवाय नित्यशुद्धबुद्ध परिपूर्ण सच्चिदानन्द अदृश्याय परमशान्तस्वरूपाय तेजोरूपाय तेजोमयाय जय जय महारौद्र भद्रावतार महाभैरव कालभैरव

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खटवांग खड्ग पाशांकुश डमरु त्रिशूल चाप वाण गदा शक्ति भिन्दिपाल तोमर मुसल मुद्गर पट्टिशपरशु परिध भुशुण्डी शघ्नी चक्राद्यायुध भीषण करसहस्रमुखदंष्ट्रा करालविकटाट्टहास विस्फारित ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युंजय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषवाहन विश्वतोमुख सर्वतो मां रक्ष रक्ष ज्वल ज्वल महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चौरान् मारय मारय मम शत्रून् उच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खटवांगेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्ड वेताल मारीच ब्रह्मराक्षसगणान् संत्रासय संत्रासय मामऽभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासय नरकभयाद् मामुद्धरोद्धर संजीवय संजीवय क्षुतृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामनन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय मृत्युंजय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।'

स्तोत्र पाठ को बोलने और मंत्र को मानस स्तर पर जपने का आदेश हमारे शास्त्रों में हैं। स्तोत्र को विद्या भी कहते हैं, जो मंत्र शत अथवा सहस्र से अधिक हो वह विद्या कहलाता है। अधिक संख्या वाले मंत्र का जप कम संख्या में किया जाता है।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

श्रीमहामृत्युंजय कवचम्- कवच का सिद्धिकरण करने के पश्चात् साधक को भगवान शिव से रक्षण प्राप्त होता है। महाभय, महारोग, महामारी, महादुःख तथा शत्रुसंहार हेतु इस कवच को विधिवत सिद्ध कर लेना चाहिये। लघु संख्या में 108 पाठ, मध्यम संख्या में 1008 पाठ तथा महाफल हेतु 1100 पाठ कर विधिवत कवच को सिद्ध कर लेना चाहिये। ऐसा करने से समस्त उपद्रव शान्त हो जाते हैं एवं परम सुख की प्राप्ति होती है। भोजपत्र पर बेलवृक्ष की कलम से अष्टगंध या केसर द्वारा लिखकर इस कवच को धारण भी किया जा सकता है।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजय कवचस्य श्रीभैरवऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमृत्युंजय रुद्रो देवता, ॐ बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकं, हौमिति तत्त्वं, श्री चतुर्वर्गफल साधनाय पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीभैरव ऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीमृत्युंजयरुद्र देवतायै नमः हृदये। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः नाभौ। हौंतत्त्वाय नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

ध्यानम्- चन्द्रमण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते। तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्यु प्राप्तोऽपि जीवति।।

स्तोत्रम्- ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युंजयो मम। श्रीशिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः।।
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्द्दी मेवताच्छ्रुती। त्रिलोवनोऽवतां गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः।।
मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः। हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुकभैरवः।।
कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु। स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु।।
नखान् मे गिरिजानाथः पायादंगुलिसंयुतान्। स्तनौ तारापतिः पातुः वक्षः पशुपतिर्मम।।
कुक्षिं कुबेरवरनः पार्श्वौ मे मारशासनः। सर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु।।
शिश्नं मे शंकरः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः। कटिं कालान्तकः पायादूरू मेऽन्धकघातकः।।
जागरूकोऽवताज्जानू जंघे मे कालभैरवः। गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युंजयोऽवतु।।
पादादिमूर्धपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु। रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः। पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः।।

ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्निलोचनः। नैर्ऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः।।

ऊर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः। दश दिक्षु सदा पातु महामृत्युंजयश्च माम्।।

रणे राजकुले द्यूते विषये प्राणसंशये। पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः।।

प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु। सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः।।

अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः। सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युंजयः।।

फलश्रुति- इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।।

पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवेदेवाधिदैवतम्। य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः।।

तस्य हस्ते महादेवि! त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः। रणे धृत्वा चरेद् युद्धं हत्वा शत्रून् जयं लभेत्।।

जयं कृत्वा गृहं देवि! स प्राप्स्यति सुखं पुनः। महाभये महारोगे महामारी भये तथा।। दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात्।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

श्रीमहामृत्युंजय सहस्रनाम स्तोत्रम्- जो मनुष्य नित्य शिव का पूजन करने के पश्चात् खड़े होकर इन हजार नामों का भक्तिपूर्वक पाठ करता है, उसे सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं। जो मनुष्य प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ तिल, बिल्वपत्र, उत्तम पुष्प या दूर्वा से शिवजी का अर्चन करता है, वह निरोगी काया को प्राप्त कर महालक्ष्मी को प्राप्त करता है तथा अन्त समय शिवलोक को जाता है। इन दिव्य नामों का विशेष अवधि तक नियमपूर्वक पाठ करने वाला जितेन्द्रिय साधक किसी भी भयंकर रोग अथवा व्याधि को विनष्ट करने में सक्षम हो जाता है। शैवाचार्य के संरक्षण में कम से कम 108 पाठ कर अवश्य सिद्ध कर लेना चाहिये।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजय सहस्रनाम स्तोत्रस्य भैरवऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीमहामृत्युंजयरुद्रो देवता, ॐ बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकं मम चतुर्विधपुरुषार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीभैरवऋषये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहामृत्युंजयरुद्रो देवतायै नमः हृदये। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

ध्यानम्- उद्यच्चन्द्र समानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं, ॐ जूं सः भुवनैकसृष्टिप्रलयोद् भूतैकरक्षाकरम्। श्रीमत्तारदशार्णमण्डिततनुं त्र्यक्षं द्विबाहुं परं, श्रीमृत्युंजयमीड्य विक्रमगुणैः पूर्ण हृदयाब्जे भजे।।

भैरव उवाच- ॐ जूं सः हौं महादेवो मन्त्रोशो मन्त्रनायकः। मानी मनोरमांगश्च मनस्वी मानवर्धनः।।

मायाकर्त्ता मल्लरूपो मल्लमारान्तको मुनिः। महेश्वरो महामान्यो मंत्री मंत्रजनप्रियः।।

मारुतो मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पाक्षिकोऽमृतः। मातंगो मात्तचित्तो मत्तचिन्मत्तभावनः।।

मानवेष्टप्रदो मेशो मानकीपति वल्लभः। मानकायो मधुस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः।।

जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः। डामरेशो विरूपाक्षो विश्वभक्तो विभावसुः।।

विश्वेशो विश्वतातश्च विश्वसूर्विश्वनायकः। विनीतो विनयी वादी वान्तदो वाग्भवो बटुः।।

स्थूलः सूक्ष्मश्चलो लोलो ललज्जिह्वाकरालकः। वीरध्येयो विरागीणो विलासी लास्यलालसः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

लोलाक्षो ललधीर्धर्मी धनदो धनदार्चितः। धनी ध्येयोऽप्यध्ययेश्च धर्मी धर्ममयोदयः।।

दयावान् देवजनको देवसेव्यो दयापतिः। दुर्णिचक्षुर्दरीवासो दम्भी देवदयात्मकः।।

कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्लीबः क्लीबात्मकः कुजः। बुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः।।

जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः। शनैश्चरो वेगगतिर्वाचालो राहुरव्ययः।।

केतु राकापतिः कालः सूर्योऽमितपराक्रमः। चन्द्रो भद्रपदो भास्वान् भाग्यदो भर्गरूपभृत्।।

कूर्तो धूर्तो वियोगी च संगी गंगाधरो गजः। गजाननप्रियो गीतो ज्ञानी स्नानार्चनः प्रियः।।

परमः पीवरांगश्च पार्वती वल्लभो महान्। परात्मको विराड्वास्यो वानरोऽमितकर्मकृत्।।

चिदानन्दी चारुरूपो गारुडो गरुडप्रियः। नन्दीश्वरो नयो नागो नागालंकारमण्डितः।।

नागहारो महानागी गोधरो गोपतिस्तपः। त्रिलोचनस्त्रिलोकेश स्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः। व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिवर्णभाक्।।

त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनाथ स्त्रिधाशान्तिस्त्रिधा गतिः। त्रिधा गुणी विश्वकर्ता विश्वभर्ता त्रिपुरुषः।।

उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृत्। विवेकाक्षो विशालाक्षो विधिर्विधिरनुत्तमः।।

विद्यानिधिः सरोजाक्षो निःस्मरः स्मरशासनः। स्मृतिदः स्मृतिमान् स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः।।

ब्राह्मी व्रती ब्रह्मचारी चतुरश्चतुराननः। चलाचलोऽचलगतिर्वेगी वीराधिपोऽपरः।।

सर्ववासः सर्वगतिः सर्वमान्यः सनातनः। सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः।।

समनेत्रः समद्युतिः समकायः सरोवरः। सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपः सुधीः सुखी।।

स्वराट् सत्यः सत्यमती रुद्रो रुद्रवपुर्वसुः। वसुमान् वसुधानाथो वसुरूपो वसुप्रदः।।

ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम्। ईशोऽवशेषोऽवयवी शेषशायी श्रियः पतिः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

इन्द्रश्चन्द्रावतंसी च चराचरजगत्पतिः। स्थिरः स्थाणुरणुः पीनः पीनवक्षाः परात्परः।।

पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकुलः। पशुरूपः पशुपतिः पशुज्ञानी पयोनिधिः।।

वेद्यो वैद्यौ वेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृदुः। शूली शुभंकर शोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः।।

शशांकधवलः स्वामी वज्री शंखी गदाधरः। चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्त्रभुजः मण्डितः।।

स्त्रुवहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः। देवो महोदधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः।।

उग्ररूपश्चोग्रपतिरुग्र वक्षास्तपोमयः। तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः।।

हरिद्धयो हयपतिर्हयदो हरिमण्डितः। हरिवाही महौजस्को नित्यौ नित्यात्मकोऽनलः।।

समानी संसृतिस्त्यागी संगी सन्निधिरव्ययः। विद्याधरो विमानी वैमानिक वरप्रदः।।

वाचस्पति वामासारी वामाचारी बलन्धरः। वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

वाग्मी कौलश्रुतिर्दशो दक्षयज्ञविनाशनः। दक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः।।

भोगी रोगहरो योगी हारी हरिविभूषणः। बहुरूपो बहुमतिर्वंगवित्ति विचक्षणः।।

नृत्तकृच्चित्तसन्तोषी नृत्यगीतविशारदः। शरदवर्ण विभूषाढ्यो गलदग्धोऽघनाशनः।।

लागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृत्। नटलो कारकेशानो वरीयान् वै विवर्णभृत्।।

सांकारष्टंकहस्तश्च पाशीशार्गः शशिप्रभः। सहस्त्ररूपी समगुः साधूनामभयप्रदः।।

साधुसेव्यः साधुगतिः सेवाफलप्रदो विभुः। स्वमहो मध्यमो मत्तो मंत्रमूर्तिः सुमन्तकः।।

कीलालीलाकरो लूतो भवबन्धैकमोचनः। रेचिष्णुर्विच्युतरतोऽमूतनो नूतनो नथः।।

न्यग्रोधरूपो भयदो भयहारीतिधारणः। धरणीधरसेव्यश्च धराधर सुतापतिः।।

धराधरोऽन्धकरिपुर्विज्ञानी मोहवर्जितः। स्थाणुः केशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

प्रियकृत प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः। प्रभाकर प्रभादीप्तो मनुमान् मानवेश्वरः।।

तीक्ष्णबाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णां शुस्तीक्ष्णलोचनः। तीक्ष्णचित्तस्त्रयीरूप स्त्रयीमूर्तिस्त्रयी तनुः।।

हविर्भुग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो हलीपतिः। हविष्मल्लोचनो हालामयो हरिणरूपभृत्।।

भ्रदिमाभ्रमयो वृक्षो हुताशो हुतभुग् गुणी। गुणज्ञो गरुडो गानतत्परो विक्रमी गुणी।।

क्रमेश्वरः क्रमकरः कृमिकृत् क्लान्तमानसः। महातेजा महामारी मोहितो मोहवल्लभः।।

मनस्वी त्रिदशो बालो वाल्यापतिरघापहः। बाल्यो रिपुहरो हार्यो गविर्गविमतो गुणः।।

सगुणो वित्तराट् गेयो विरोचनो विभावसुः। मालामयो माधवश्च विकर्तनोऽविकत्थनः।।

मानकृन्मुक्तिदोऽमूल्यः साध्यः शत्रुभयंकरः। हिरण्यरेताः शुभगः सतीनाथः सुरापतिः।।

मेढ़ो मैनाकभगिनीपतिरुत्तमरूपभृत्। आदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रः क्षयंकरः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

वासुदेवो महाभाग्यो विश्वावसुर्वसुप्रियः। समुद्रोऽमिततेजश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी।।

गुरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाथ ईश्वरः। यज्ञिपेयो वाजपेयः शतिक्रतुः शताननः।।

प्रतिष्ठस्तीव्रविस्रम्भी गम्भीरो भाववर्धनः। मायिष्ठो मधुरालापो मधुमत्तश्च माधवः।।

मायात्मा भोगिनां त्राता नाकिनामिष्टदायकः। नाकेन्द्रो जनको जन्यस्तम्भनो रम्भनाशनः।।

ईशान ईश्वर ईशः शर्वरीपति शेखरः। लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदाध्यक्षो विचारकः।।

भव्योऽनर्घो नरेशानो नरकान्तकसेवितः। चतुरो भविता भावी विरामो रात्रिवल्लभः।।

मंगलो धरणीपुत्रो धन्यो बुद्धि विवर्धनः। जयो जीवेश्वरो जारो जाठरो जह्नुतापनः।।

जह्नुकन्याधरः कल्पो वासरो मास एव च। कर्तुर्ऋभुसुताध्यक्षो विहारो विहगापतिः।।

शुक्लाम्बरो नीलकण्ठः शुक्लो भृगुसुतो भगः। शान्तः शिवप्रदो भव्यो भेदकृच्छान्तकृत्पतिः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

नाथो दान्तो भिक्षुरूपो धन्यश्रेष्ठो विशाम्पतिः। कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधि विग्रही रसः।।

नीरसः सुरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः। पंचाचस्यः षण्मुखश्चैव विमुखः सुमुखी प्रियः।।

दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः। पात्री पौत्री पवित्रश्च भूतोक्त पूतनान्तकः।।

अक्षरं परमं तत्त्वं बलवान् बलघातनः। भल्ली मौलिभवाभावो भावाभावविमोचनः।।

नारायणो युक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः। कारामोक्षप्रदो जेयो महांग सामगायनः।।

उत्संगमो नामकारी चारी स्मरनिषूदनः। कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रयाकुलः।।

त्रियामा दुर्गतित्राता दुर्गमो दुर्गघातकः। महानेत्रो महाधाता नानाशस्त्रविचक्षणः।।

महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः। महाचक्षुर्महानाशो महाग्रीवो दिगालयः।।

दिग्वासा दितिजेशानो मुण्डी मुण्डाक्षसूत्रधृत्। स्मशाननिलियो रागी महाकटिरनूतनः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

पुराणपुरुषः पारम्परमात्मा महाकरः। महालस्यो महाकेशो महेशो मोहनो विराट्।।

महासुखो महाजंघो मण्डली कुण्डली नटः। असपत्न्यः पत्रकरः पत्रहस्तश्च पाटवः।।

लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कल्पितः। कल्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः।।

अनलः पवनः पाठः पीठस्थ पीठरूपकः। पाठीनः कुलसी पीनो मेरुधामा महागुणी।।

महातूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा। अथर्वशेषः सौम्यास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः।।

यजुः साममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः। याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञो वै धरणीपतिः।।

जंगमी भंगदी भासा दक्षाभिगमदर्शनः। अगम्यः सुगमः खर्व खेटी खेटाननो नयः।।

अमोघार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यगः। विकालज्ञः सगणकः पुष्करस्थः परोपकृत्।।

उपकर्ताऽपकर्ता च घृणी रणभयप्रदः। धर्मा चर्माम्बरश्चारूरूपश्चारू विभूषणः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

नक्तंचरः कायवशी वशी वशिवशो वशः। वश्या वश्यकरो भस्मशायी भस्मविलेपनः।।

भस्मांगी मलिनांगश्च मालामण्डितमूर्धजः। गणकार्यः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः।।

मकरो गोत्रभिद् गोप्ता भीमरूपो भयानकः। अरुणश्सचैकवित्तश्च त्रिशंकुः शंकुधारणः।।

आश्रमी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्यहेतुकः। वैश्यः शूद्रः कपोतस्थस्त्वरुष्टोऽथ रुषाकुलः।।

रोगी रोगापहा शूरः कपिलः कपिनायकः। पिनाकीचाष्टमूर्तिश्च क्षितिमान् धृतिमांस्तथा।।

जलमूर्तिर्वायुमूर्तिर्गताशः सोममूर्तिमान्। सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः।।

भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः। भवः शर्वस्तथा रुद्रः पशुनाथश्च शंकरः।।

गिरिजो गिरिजानाथो गिरिन्द्रश्च महेश्वरः। भीम ईशान भीतिज्ञः खण्डपश्चण्डविक्रमः।।

खण्डभृत् खण्डपरशुः कृत्तिवासा वृषापहः। कंकाल कलनाकार श्रीकण्ठो नीललोहितः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

गुणीश्वरो गुणी नन्दी धर्मराजौ दुरन्तकः। भृंगरीटी रसासारी दयालु रूपमण्डितः।।

अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः। त्रिपुरान्तक ईशानस्त्रिनेत्रः पंचवक्त्रकः।।

कालहृत् केवलात्मा च ऋग्यजु सामवेदान्। ईशानः सर्वभूतानामीश्वरः सर्वरक्षसाम्।।

ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्म ब्रह्मणोऽधिपतिस्था। ब्रह्मा शिवः सदानन्दी सदानन्दः सदाशिवः।।

मेषस्वरूपश्चार्वंगो गायत्रीरूपधारणः। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतराय च।।

सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपिणे। वामदेवस्तथा ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालकराकलः।।

महाकालो भैरवेशो वेशा कलविकारणः। बलविकारणो बालो बलप्रमथनस्तथा।।

सर्वभूतादिदमनो देवदेवो मनोन्मनः। सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।।

भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवः। भवनो भावनो भाव्यो बलकारी परःपदम्।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

परः शिवः परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः। परावरः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तम्।।

ॐ ऐं श्रीं हसौं देवः ॐ ह्रीं ह्रैं भैरवोत्तमः। ॐ ह्रां नमः शिवायेति मन्त्रो वटुवरायुधः।।

ॐ ह्रौं सदाशिवः ॐ ह्रीं आपदुद्धारणो मतः। ॐ ह्रीं महाकरालास्य ॐ ह्रीं बटुकभैरवः।।

भर्गस्त्रियम्बक ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं चन्द्रार्धशेखरः। ॐ ह्रीं सं जटिलो धूम्र ॐ ऐं त्रिपुरघातकः।।

ह्रां ह्रीं ह्रं हरिवामांग ॐ ह्रीं ह्रं ह्रीं त्रिलोचनः। ॐ वेदरूपो वेदज्ञ ऋग्यजुः सामरूपवान्।।

रुद्रो घोररवो घोर ॐ क्षं ह्रं ह्रीं अघोरकः। ॐ जूं सः पीयूषसक्तोऽमृताध्यक्षोऽमृतालसः।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ जूं सः मृत्युंजयः। पातु मां सर्वदेवेशो मृत्युंजय सदाशिवः।।

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

भगवती अमृतेश्वरी मन्त्र– पुरुष देवता के साथ उसकी शक्ति का दशांश मंत्रजप करने से पूर्ण फल प्राप्त होता है। अतः मृत्युंजय प्रयोग के साथ अमृतेश्वरी देवी का विधिपूर्वक दशांश जप होम करने से पूर्णफल मिलता है।

ध्यानम्– जाग्रद बोधसुधामयूखनिचयैराप्लाव्य सर्वादिशो, यस्याः कापि कला कलंकरहिता षटचक्रमाक्रामति। दैन्यध्वान्तविदारणैकचतुरा वाचं परां तन्वती,या नित्या भुवनेश्वरी विहरतां हंसीव मन्मानसे।।

मंत्र– 'ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युंजये भगवति चैतन्य चन्द्रे हंससंजीवनी स्वाहा।'

अन्त में किस परिस्थिति में किस मंत्र का किस विधि से साधक को प्रयोग करना है, इसका सबसे अच्छा विकल्प कई दिशाओं में भटककर साधनाओं में सफलता एवं असफलता का स्वाद चख चुका अनुभवी गुरु है। ऐसा सद्गुरु सौभाग्य से मिल जाये तो मनुष्य के समय, ऊर्जा एवं धन इन सबका अपव्यय नहीं होता है। इसलिये मंत्र अनेक और गुरु केवल एक।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

Shri RajVerma ji
Mobile- +91-9897507933,91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana